कंगूरे वाले मकान का रहस्यमय मामला

होल्गर पुक्क

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : रु. 20.00

प्रथम संस्करण : 2004
पुनर्मुद्रण : जनवरी 2010

प्रकाशक

अनुराग ट्रस्ट
डी - 68, निरालानगर
लखनऊ - 226020

लेज़र टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन
मुद्रक : वाणी ग्राफिक्स, अलीगंज, लखनऊ

कंगूरे वाले मकान का रहस्यमय मामला

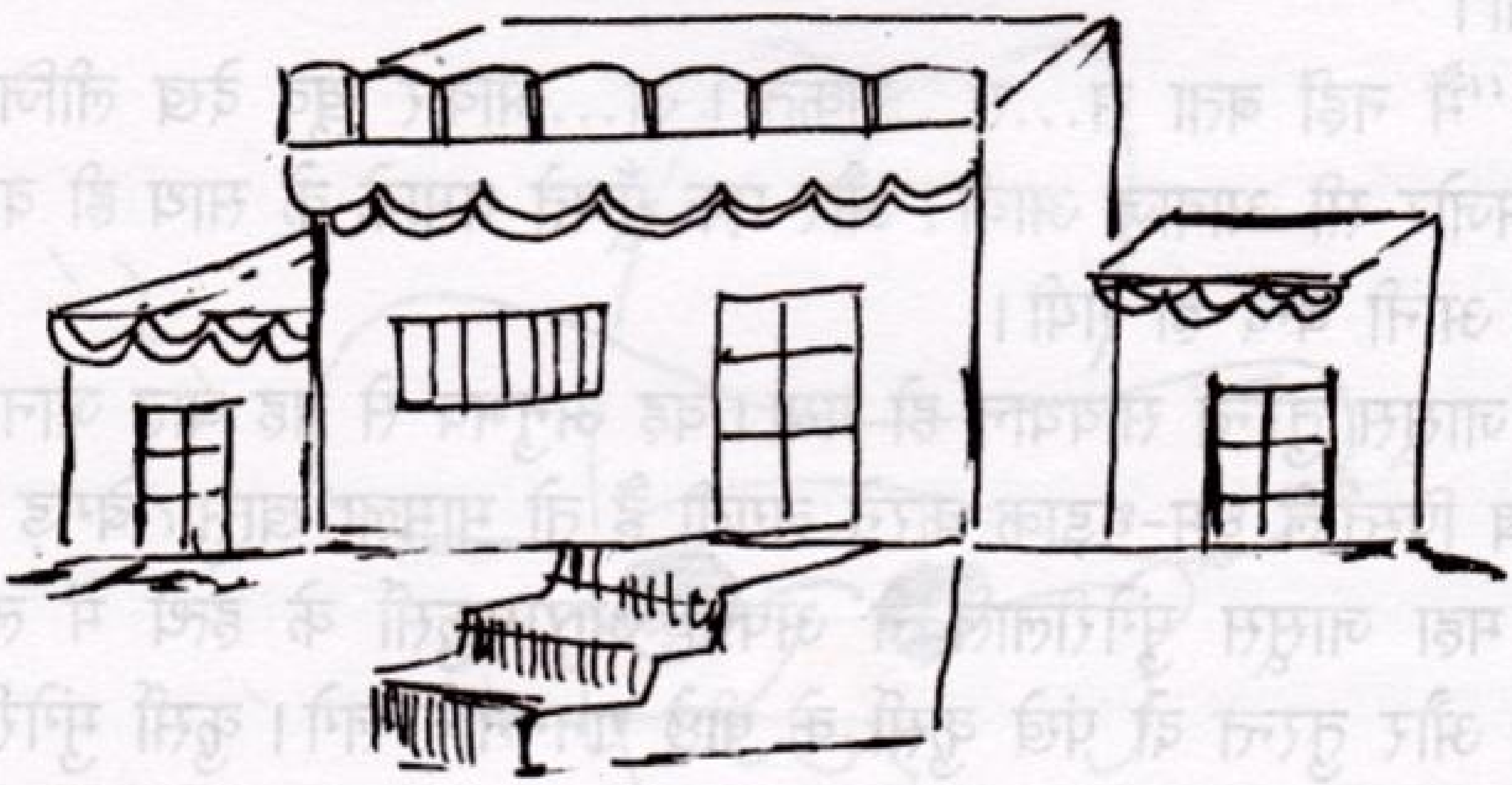

तुम लोगों में से कुछ ने चीड़ और देवदारु मार्ग के कोने पर एक छोटा प्यारा-सा कंगूरे वाला मकान देखा होगा। तुम में से कुछ यह भी जानते होंगे कि उसमें करन चाचा, अमिता चाची और टीटू की दादी सुभद्रा रहते हैं।

परन्तु जो कहानी मैं तुम्हें सुनाने जा रहा हूँ उसका तो कोई अन्दाज भी तुम्हें नहीं होगा क्योंकि इसके बारे में सिर्फ करन चाचा, अमिता चाची, सुभद्रा दादी, महा जासूस मुंगेरी लाल, मैं और टीटू जानते हैं।

हर कहानी का एक शीर्षक होता है। इस परम्परा को न मानने की ऐसी कोई मजबूरी नहीं है क्योंकि इसके लिए मेरे पास एक बिल्कुल सटीक शीर्षक है।

एक दिन मुंगेरीलाल महा जासूस के मेज पर फोन की घंटी घनघनाने लगी, एक घबरायी सी अनुनय-विनय करती आवाज थी।

"श्रीमान, चीड़ और देवदारु मार्ग के क...कोने पर, क...कंगूरे वाले मकान में

क्या आप म...मेहरबानी करके फौरन आ सकते हैं.....मामला यहाँ दिन-प्रतिदिन ....ब..बद से बदतर होता जा रहा है...और आज हालात हमेशा से कहीं अधिक ब...ब..बुरा है।"

"क्या चल रहा है वहाँ?" महा जासूस बुदबुदाया। कंगूरे वाले मकान में जाने के लिए वह बहुत उत्सुक नहीं था क्योंकि उसके हाथ में पहले से ही एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मामला था। उसे दो लापता बर्फ के आदमियों की गुत्थी सुलझानी थी। वह एक साधारण-सा मामला ही था, परन्तु दुर्भाग्यवश कहीं पर अँगुलियों का निशान नहीं मिला था।

"मैं नहीं बता स...स...सकता। अ...आकर खुद देख लीजिये," जवाब में एक कमजोर सी आवाज आयी। और एक गूँजते धमाके के साथ ही वह हकलाती सी आवाज आनी बन्द हो गयी।

जासूस तुरन्त सावधान हो गया। वह अनुभव से यह बात जानता था कि एक बार जब पिस्तौलें धूम-धड़ाक करने लगती हैं तो मामला खासा बिगड़ चुका होता है।

महा जासूस मुंगेरीलाल ने अपनी आरामकुर्सी के हत्थे में लगा एक बटन दबाया। और तुरन्त दो पंखे कुर्सी के पीछे गनगनाने लगे। कुर्सी मुंगेरीलाल को लिए हुए हवा में ऊपर उठी और जूँ-जूँ करते खुली खिड़की के रास्ते तेजी से बाहर निकल गयी। यह किसी सफर पर जाने का एक सुविधजनक तरीका था, आप को अपने पैरों का इस्तेमाल करने की कोई जरूरत ही नहीं। और ठीक इसी वजह से महा जासूस एक गुब्बारे की तरह खूब गोलमटोल हो गया था।

चीड़ और देवदारु मार्ग के कोने वाले मकान पर पहुँचकर उसने घूम-घूमकर उसका दो-चार चक्कर लगाया। वह ऐसा कोई मार्ग देख रहा था जिससे होकर वह अन्दर उतर सके। उसे दुनिया में किसी भी चीज से अधिक नफरत सीढ़ियाँ चढ़ने से थी।

उसे एक दरवाजेनुमा खिड़की खुली हुई मिल गयी और वह सीधे बैठक-खाने के बीचोबीच उतरा।

मुंगेरीलाल एक अनुभवी जासूस था, फिर भी उसके मन में पहला भाव यह

उठा कि उल्टे पाँव वापस लौट जाये। परन्तु उसने खुद को काबू में रखा। एक जासूस को कभी-भी डर कर भागना नहीं चाहिए।

आखिर उसने ऐसा क्या देखा?

करन चाचा बहुत विकट ढंग से हिल रहे थे। वह किसी लट्टू की तरह गोल-गोल घूमते जा रहे थे और अपने चारों ओर डरी-डरी निगाहों से ताक रहे थे। उन्होंने अपने कानों में रुई ठूंस रखी थी। बीच-बीच में वे घुटने के बल बैठ जाते और

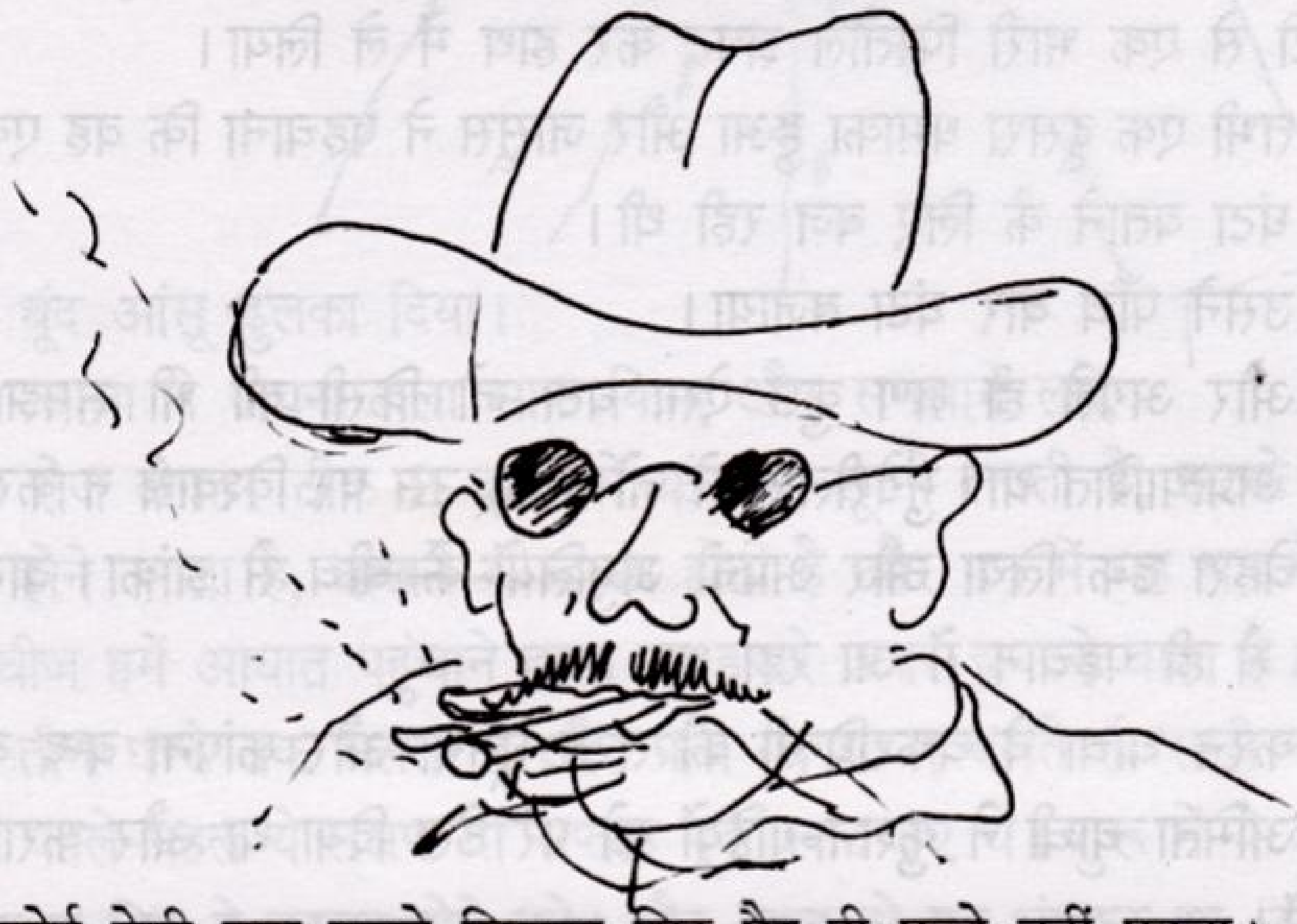

चिल्लाकर कोई ऐसी बात कहते जिसका सिर पैर ही पल्ले नहीं पड़ता।

अमिता चाची ने कसीदाकारी की हुई एक-एक कुशन-गद्‌दी अपने दोनों कानों पर दबा रखी थी। वह कोने में एक बड़े से रबर-प्लाण्ट के पीछे खड़ी, अपनी आँखें गोल-गोल घुमा रही थीं और आह भर रही थीं।

सुभद्रा दादी चेहरे पर मुस्कुराहट लिए कमरे में इधर से उधर चक्कर काट रही थीं और लगातार हुश!...हुश!.... बोलती जा रहीं थीं। परन्तु बीच-बीच में, वह इस कदर हवा में उछलने कूदने लगती और अत्यन्त कर्कश आवाज में चीख पड़ती मानो सूई चुभोई जा रही हो।

मुंगेरीलाल समझ नहीं पाया कि यह सब क्या हो रहा था। क्या यह कोई पागलखाना था? या किसी ने उसके साथ मजाक किया था?

आखिरकार वह चिल्लाया

"मुझे किसने बुलाया है?"

"मैंने बु...बुलाया," अभी भी गोल-गोल घूमते और अपनी फटी-फटी आँखों से देखते, करन चाचा हकलाये।

"और मुझे आपने बुलाया भला किसलिये?" मुंगेरीलाल ने सख्ती से पूछा।

उसी क्षण वहाँ एक धमाका हुआ। सहज आदतवश मुंगेरीलाल ने अपनी कमरपेटी से एक भारी पिस्तौल झपट कर हाथ में ले लिया।

तभी एक दूसरा धमाका हुआ और जासूस ने पहचाना कि वह एक दीवाल घड़ी थी जो घंटा बताने के लिए बज रही थी।

उसने पाँच बार घंटा बजाया।

और अगले ही क्षण कुछ ऐसा घटा जो किसी की भी समझ से परे और बिल्कुल अप्रत्याशित था। मुंगेरीलाल ने जो देखा, उस पर विश्वास न कर सका। उसने अपना चेहरा ढक लिया और अपनी अंगुलियों के बीच से झांका। वास्तव में, दृश्य मुश्किल से ही पहचान में आ रहा था।

करन चाचा ने चकरघिन्नी की तरह घूमना और कांपना बन्द कर दिया था।

अमिता चाची ने कुशन-गद्दियों को परे ठेल दिया था और कराहना बन्द कर चुकी थीं।

सुभद्रा दादी, अब चीख नहीं रही थीं, न वह हवा में उछल कूद रही थीं और न ही किसी को हुश-हुश कर रही थीं।

वे एक बार फिर साधारण, शान्त लोग थे। तीनों ही मुंगेरीलाल की कुर्सी के चारों ओर जुट आये।

"आप की बहुत मेहरबानी है कि आप हमारी मदद के लिए आ गये," अमिता चाची बोल उठीं और उसके गाल पर चूम लिया।

सुभद्रा दादी ने खूब जोर-जोर से उसका हाथ हिलाया और आभार में उसके

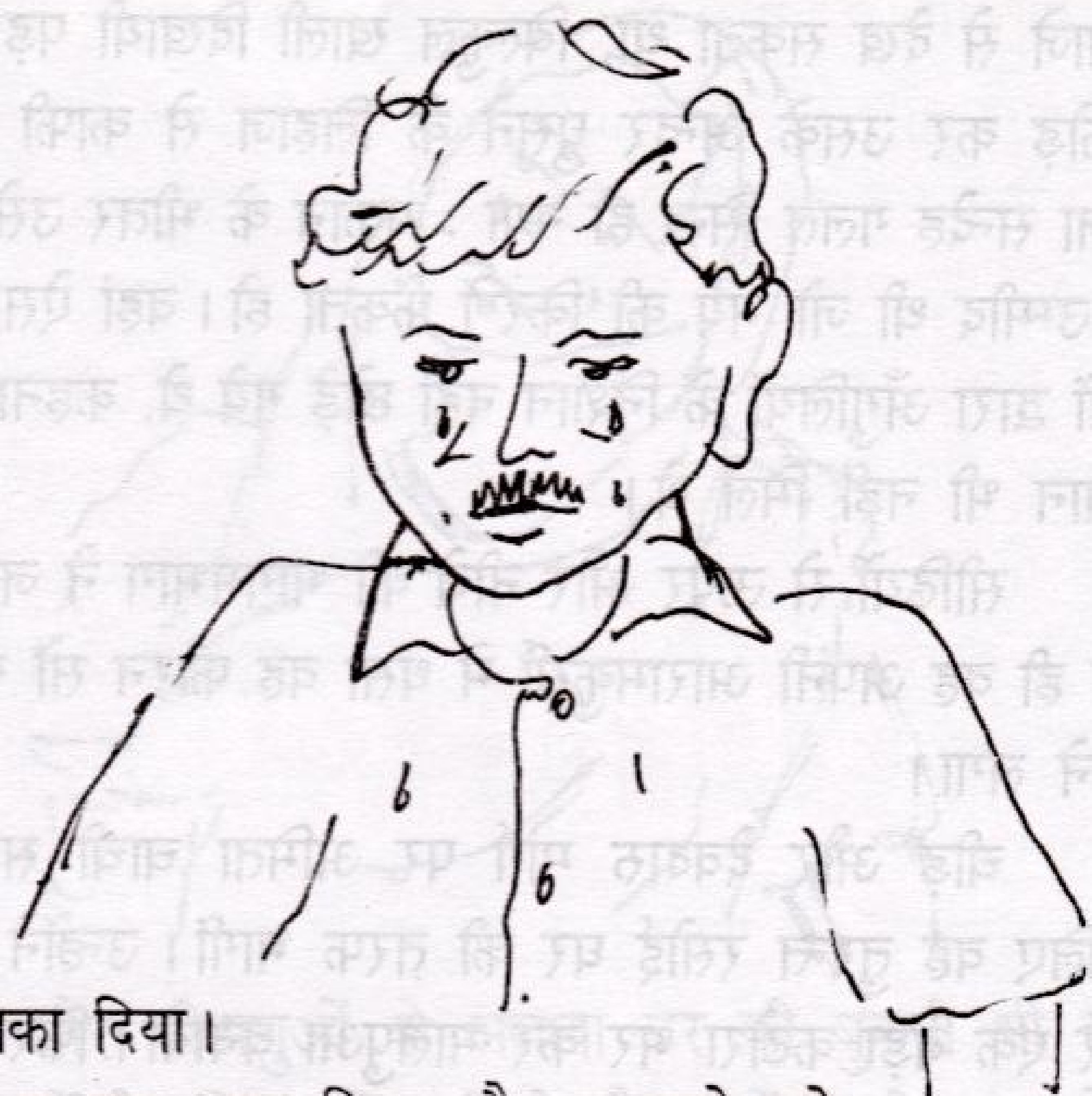

कोट पर दो बूंद आंसू ढुलका दिया।

करन चाचा ने अपना गला साफ किया और समझाने लगे,

"हर रोज दोपहर ठीक 2 बजे हमें कंपकंपी छूटने लगती है, झटके आते हैं, कानों में दर्द होने लगता है, चीखने की इच्छा होती है और मन में यह भय बैठ जाता है कि कोई चीज हमें आघात पहुंचाने वाला या हमारे ऊपर झपटने वाला है। यह सब कम से कम तीन घण्टे तक चलता है और पांच का घण्टा बजते ही सारी चीजें बन्द हो जाती हैं। पहले-पहल ये लक्षण दो सप्ताह पूर्व प्रकट हुए थे। शुरू में ये कुछ हल्के थे परन्तु दिन-ब-दिन ये बदतर होते गये। और आज तो यह भंयकर था, आपने खुद ही इसे अभी-अभी देखा है।"

"बिल्कुल! यह तो दिन के उजाले की तरह साफ है," महा जासूस मुंगेरीलाल ने तसल्ली दी। जो इस बात का संकेत था कि वह बुरी तरह चकराया हुआ है।

"प्यारे, जासूस जी। कृपया इस भयानक जादू-टोने से हमें बचाइये!"

मुंगेरीलाल को जादू मंत्र में विश्वास नहीं था, इसलिये अपनी जाँच-पड़ताल का काम उसने मकान की तलाशी लेने से शुरू किया। कमरों की, तहखाने और दुछत्ती की खोज-बीन में कुछ भी सन्देहास्पद नहीं निकला। छोटा-सा कंगूरा भी, जहाँ तक वह

दरवाजे से देख सकता था, बिल्कुल खाली दिखायी पड़ रहा था। मुंगेरीलाल खुद को सिकोड़ कर उसके अन्दर घुसने के लिहाज से काफी मोटा था। इस प्रकार उसका पहला सन्देह गलत सिद्ध हो गया : मकान के भीतर उसे एक ऐसा रहस्यपूर्ण यंत्र पाने की उम्मीद थी जो भय की किरणें फेंकता हो। वहां ऐसा कोई यंत्र नहीं था। अजनबी लोगों द्वारा अँगुलियों के निशान नहीं छोड़े गये थे, कहना न होगा कि पैरों के रहस्यमय निशान भी नहीं मिले थे।

सीढ़ियों से ऊपर और नीचे की भागमभाग ने जासूस को थका मारा था। अतः जैसे ही वह अपनी आरामकुर्सी में धंसा वह फौरन सो गया और जोर-जोर से खर्राटा मारने लगा।

चीड़ और देवदारु मार्ग पर अमिता चाची सबसे अधिक दयालु जीव थीं। इसलिए वह तुरन्त रसोई घर की तरफ भागीं। उन्होंने दूध, आटा और अण्डा फेंटा और एक बड़ा कटोरा भर कर मालपुआ बनाया। फिर उन्होंने कॉफी तैयार की और मुंगेरीलाल को जगाया। मुंगेरीलाल इस तरह के हल्के-फुल्के नाश्ते से इंकार नहीं कर सका।

बड़े-बड़े चौबीस मालपुए और छः प्याली क्रीम वाली कॉफी लेने के बाद उसने नई ऊर्जा के साथ अपनी जांच-पड़ताल को जारी रखा।

उसने अपनी कुर्सी का हत्था उठाया, नीचे एक गुप्त दराज दिखायी पड़ा। जिसमें एक सूक्ष्मदर्शी यंत्र रखा हुआ था। जासूस ने दूध की बोतल में पड़े दूध की बूदों की जांच की। उस घर में प्रतिदिन दो बजे के पहले खाना खाने और उसके साथ दूध पीने का रिवाज था। इस बात की संभावना थी कि उनके दूध को भय के कीटाणुओं से दूषित कर दिया गया हो।

दुर्भाग्यवश, यह चतुराई से भरा अनुमान प्रमाणित नहीं हो पाया। दूध की बूंदें किसी किस्म की संदेहजनक कीटाणुओं को आश्रय देती नहीं पायी गयीं, बड़े जीवों की तो बात ही क्या करना। ‘‘बिल्कुल ठीक! दिन की तरह स्पष्ट है!’’ मुंगेरीलाल बड़बड़ाया। जिसका अर्थ बेशक यह था कि वह बुरी तरह चकराया हुआ है। लेकिन उसने अपनेआप को सम्हाला और दृढ़तापूर्वक कहा,

"भय की किरणें और कीटाणुओं के अलावा डर की बुकनी भी होती है। नियमतः, इसे किसी ताली के छेद से या खिड़की के चौखट में किसी दरार से मकान के अन्दर फूँक दिया जाता है। इसका प्रभाव तीन घंटे तक महसूस होता है। यह बात एकदम सटीक जम रही है। बिल्कुल दिन के उजाले की तरह साफ। कल हम अपराधी को रंगे-हाथों पकड़ लेंगे।"

"कितने होशियार हैं आप!" अमिता चाची चिल्ला उठी। लेकिन इस दफा वह उसे गाल पर चूमने की हिम्मत नहीं बटोर सकीं। दादी मां ने खुशी से आँसू की दो और बूंदे उसकी सदरी पर एक बार फिर लुढ़कायी।

परन्तु करन चाचा ने अपना गला साफ किया और अप्रसन्नता के साथ बोल पड़े,

"मुझे इस बात पर हैरानी है कि भला क्यों कोई इस घर में बुकनी फूँकना चाहेगा।"

"बिल्कुल ठीक!" महा जासूस ने आत्मविश्वास के साथ कहा। "यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न है। कल हम अपराधी से पूछ लेते हैं।"

मुंगेरीलाल ने दो दर्जन सहायकों को अपने पास भेजे जाने का आदेश दिया

और उन्हें रात भर काम में लगाये रखा। सबसे पहले, क्रेन की मदद से कंगूरे की छत हटायी गयी और मुंगेरीलाल अपनी आराम कुर्सी में बैठे-बैठे सीधे कंगूरे के बीचो-बीच उतरा। फिर छत को वापस रख दिया गया। मुंगेरीलाल के लिये वह कंगूरा एक आदर्श जगह थी। वह अब हर चीज पर निगाह रख सकता था।

उसके सहायक बगीचे में काम कर रहे थे। उन्होंने हर खिड़की और दरवाजे के निकट एक-एक दर्पण छिपा कर रख दिया था। इन दर्पणों की एक उलझी हुई प्रणाली के जरिये खिड़कियों और दरवाजों के प्रतिबिम्ब ऊपर कंगूरे तक भेजे जा रहे थे। वहाँ, हमारे जासूस के सामने छः दर्पण लगे हुए थे, क्योंकि खिड़कियाँ और दरवाजे कुल मिलाकर छः ही थे। जो भी बुकनी फूँकने के लिये आता, बिल्कुल नजरों के दायरे में होता।

अपराधी को पकड़ने के उद्देश्य से हर दरवाजे और खिड़की के नीचे गहरा गड्ढा खोद दिया गया था। गड्ढे पर फंदे लगाये गये थे और सबकुछ घास से ढंक दिया गया था। कंगूरे के भीतर बैठे जासूस को करना बस यह था कि एक बटन दबा दे, फंदा खुलता और अपराधी कैद हो जाता।

सबकुछ तैयार था।

डेढ़ बज चुका था, फिर एक बजकर चालीस मिनट और फिर ठीक दो .... किसी का अता-पता नहीं था। करन चाचा, अमिता चाची और सुभद्रा दादी में, बहरहाल, बेचैनी के लक्षण प्रकट होने लगे थे। वे कातरता के साथ इधर-उधर ताक रहे थे, अपने कानों को ढंक लिया था और ऐंठने तथा कराहने लगे थे।

"मैं अब और अ...अधिक बर्दाश्त नहीं कर स...सकता," आखिरकार करन चाचा चीख पड़े और बाहर बगीचे की ओर भागे, जाते हुए वे फलांग मार रहे थे और गोल-गोल घूम रहे थे। अमिता चाची और सुभद्रा दादी ठीक उनके पीछे-पीछे भागीं। वे मकान के पिछवाड़े भोज वृक्षों के झुरमुट की ओर दौड़ पड़ी और जल्दी ही नजरों से ओझल हो गयीं। "मुझे इस जगह की फौरन तलाशी लेनी होगी।" मुंगेरीलाल के दिमाग में तेजी के साथ यह विचार घूम गया, "लगता है भय का वह सौदागर मकान के भीतर काम पर जुट गया है!"

परन्तु दुर्भाग्यवश मुंगेरीलाल का बाकी-टाकी काम नहीं कर रहा था। उसके पास छत हटाने वालों को बुला भेजने का कोई जरिया न था और दरवाजे, यदि तुम्हें याद हो, उसके लिए काफी संकरे पड़ रहे थे।

महा जासूस के सामने पहले भी कठिन परिस्थितियां आ चुकी थीं, लेकिन उसकी सूझ-बूझ के चलते शानदार कामयाबी ने हर हमेशा उसके कदम चूमें थे। इस बार भी ऐसा ही हुआ। उसने अपनी बेवाज पिस्तौल पर मुट्ठी कस ली। और मजबूत हाथों से दरवाजे के चौखट से एक फीट दूर बाजू वाले हिस्से पर वह एक सघन कतार में ताबड़तोड़ गोलियां दागने लगा। गोलियों ने फर्श से लेकर छत तक एक रेखा खींच दी। दीवार के ढीले पड़ गये हिस्से को उसने एक किनारे खिसका दिया और दरवाजा इतना चौड़ा हो गया कि उसके निकलने लायक मार्ग बन सके।

महा जासूस घुमावदार सीढ़ियों से धड़धड़ाते हुए नीचे कमरे की ओर झपटा। दहलीज पर ही उसका स्वागत माथे पर एक करारे चपेटे से हुआ। उसने अपने दांत भींच लिये और पिस्तौल को बाहर खींचा। ठीक उसी समय उसके पाँव जमीन से उखड़ गये और वह पीछे लुढ़कता हुआ हाल में जा गिरा।

मुंगेरीलाल ने वैसी ही मुद्रा में पड़े रहने का निश्चय किया। उसे भरोसा था कि जब तक वह फर्श पर पड़ा रहेगा उस पर हमला नहीं होगा। उसने चोरी-छिपे दहलीज के ऊपर से झांका।

वह अपनी आंखों पर विश्वास न कर सका। कमरे के बीचोबीच एक लड़का खड़ा था। उस लड़के के बाल उलझे हुए थे और उसकी दुबली पतली टांगें चोटों और खरोचों से भरी हुई थीं। उसने सुभद्रा दादी का आलू मसलने वाला यंत्र हाथ में पकड़ रखा था। बगल में उसने एक बेलन, तीन बड़े कलछुल, दो लोहे के मजबूत सींखचे और एक टोंटी वाला रिन्च एक साथ दबा रखा था।

दरवाजे के मार्ग में सात लट्ठे खड़े करके रखे गये थे, जाहिरातौर पर निशाना लगाने के उद्देश्य से। लड़का लक्ष्य भेदने का अभ्यास कर रहा था।

"वह मकान में उस समय घुसा होगा जब मैं ऊपर सीढ़ियों पर द्वार-मार्ग को चौड़ा करने में व्यस्त था," मुंगेरीलाल ने तुरन्त निष्कर्ष निकाला।

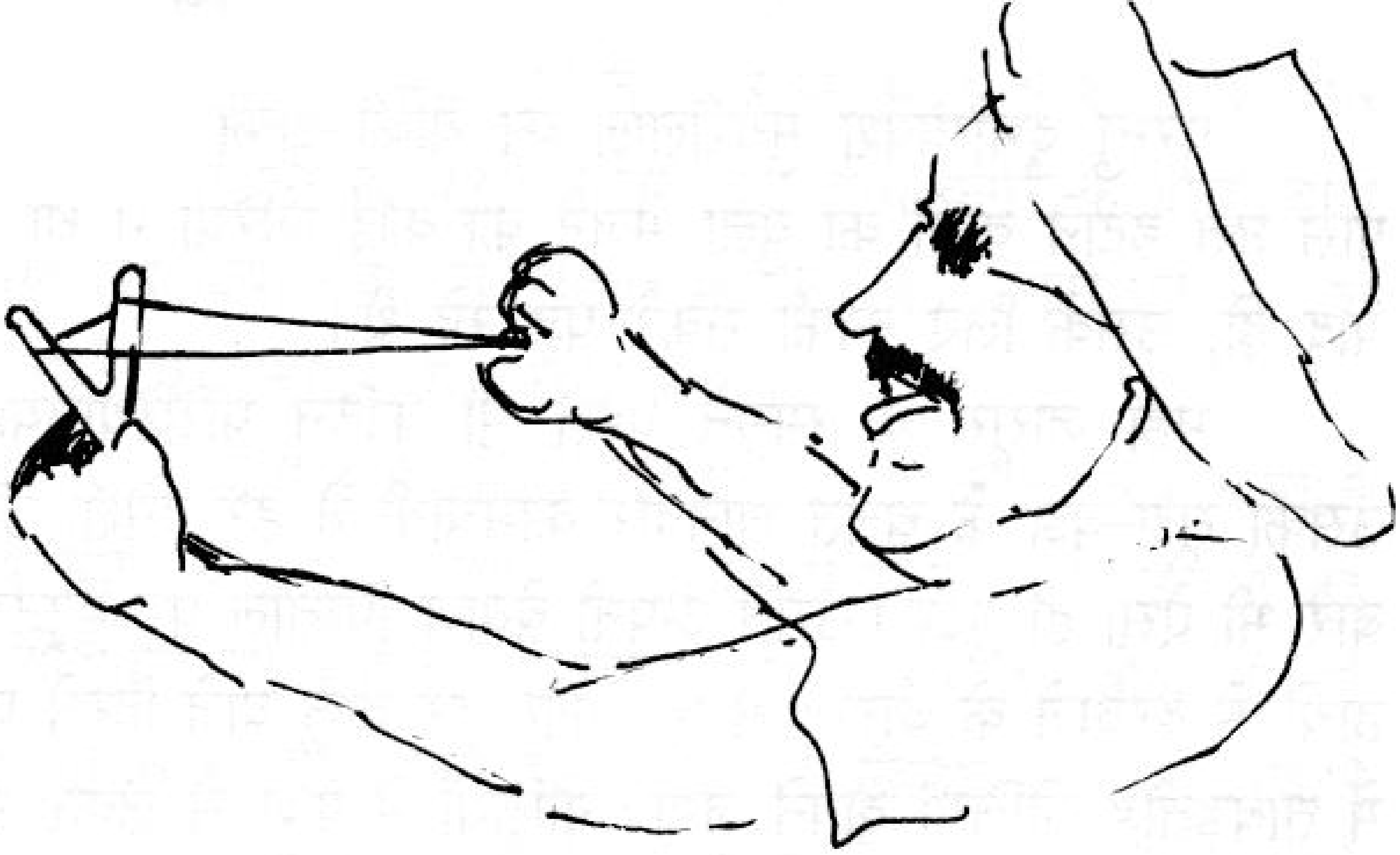

ठीक उसी क्षण आलू मसलने वाला उपकरण उसके सिर के ऊपर से सनसनाता हुआ हाल में जा गिरा और साथ ही करन चाचा का गोल फेल्ट हैट व अमिता चाची का टोप खूंटी से उड़ा ले गया।

महा जासूस अपने पैरों पर उठ खड़ा हुआ और बहुत सख्ती से बोला

"कानून के नाम पर, फौरन रुक जाओ! यह कत्तई....." उसे अपनी बात पूरी नहीं करने दी गयी। बेलने का निशाना लट्ठे पर जा लगा था, जो बदले में उड़ता हुआ जासूस की छाती से आकर टकराया और अचानक जैसे साँस अटक गयी हो, वह छटपटाकर चुप हो गया। लड़के ने खून सर्द कर देने वाली चीत्कार के साथ उसके आदेश का प्रत्युत्तर दिया "रुकना नहीं चाहता....। खेलना चाहता हूँ ..."

महा जासूस ने अपने कान अपने हाथों से ढक लिए। परन्तु इससे भी कोई बहुत मदद न मिली। कुशन-गद्दी भी ऐसी कानफाड़ू चीख को रोक नहीं पाये होते।

"सुनो, लड़के," जासूस ने आगे की ओर बढ़ते हुए धमकाया। "मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।"

और गुलेल से छूटी एक गोली उसके माथे से जा टकरायी।

मुंगेरीलाल ने, अपना पूरा साहस बटोरते हुए, एक और कदम लड़के की ओर बढ़ाया। उसने लड़के के सिर को थपथपाने और उसको बाँह से पकड़ने के इरादे से अपना हाथ आगे बढ़ाया। लड़का पवन चक्की के पंखों की तरह हाथ-पैर फेंकने और

पटकने लगा और कान के परदे फाड़ देने वाली एक हूकती हुई चीख हवा में तैर गयी। पूरी तरह से पस्त, जासूस महोदय फर्श पर ढह गये।

आखिरी बात जो उनके कानों में पड़ी वह लड़के की चीखती हुई आवाज थी,

"सब लोग कहाँ चले गये? सुभद्रा दादी! सुभद्रा दादी! टीटू भूखा है! टीटू को मालपुआ चाहिए!"

महा जासूस को अपने गालों पर टपकती हुई आँसू की दो गर्म बूंदों से होश आ गया। आँख खोलते ही उसने अमिता चाची और सुभद्रा दादी का मुस्कुराता चेहरा अपने सामने देखा। "बिल्कुल ठीक! दिन की उजाले की तरह साफ," मुंगेरीलाल फुसफुसाता हुआ बोला। और इस बार उसने बीमारी की नब्ज ठीक पकड़ी।

"आप इस बात से भयभीत रहते थे कि स्कूल के बाद टीटू आप से मिलने आयेगा। पाँच बजे के बाद वह नहीं आ सकता था क्योंकि तब उसकी मां घर पर होती है, यह बात आप को मालूम थी। फिर टीटू एक दिन नहीं आता.... दूसरे दिन भी वह नहीं आता... जितना ज्यादा वह आपसे इंतजार कराता है उतना ही इस अप्रिय मुलाकात की आशंका से त्रस्त आप की बेचैनी बढ़ती जाती है। आप का भय एक लुढ़कते हुए हिमगोले की तरह है जो बढ़ता है और बढ़ता ही जाता है ....बिल्कुल यही बात है!"

"ओह कितने चतुर हैं आप प्यारे मुंगेरीलाल!" अमिता चाची चिल्ला पड़ी, और सुभद्रा दादी ने खुशी के कुछ और आँसू ढुलकाये।

"हूँ!" करन चाचा ने अपना गला साफ किया, "बागीचे वाले गढ़े,.... वहाँ आसानी से किसी की टाँग टूट सकती है..."

इसने महा जासूस को अपने कर्तव्य की याद दिला दी। वह, जोर-जोर से हाँफते हुए, किसी तरह जोर लगा कर अपने पैरों पर खड़ा हुआ और माँग की,

"कहाँ है वह शैतान? मुझे उससे कुछ गम्भीर बातें करनी है।"

"टीटू वहाँ है," दादी ने रसोई घर की ओर इशारा किया।

जासूस बदतर से बदतर स्थिति का मुकाबला करने के लिए तैयार था। परन्तु मेज पर एक प्यारा सा, शान्त नन्हा बच्चा बैठा हुआ जई के आटे से बना अपना

दलिया खा रहा था।

भोज की टहनियों से बना एक बड़ा-सा सोंटा पास ही पड़ा हुआ था और लड़का अपनी नजरें उस पर से बिल्कुल नहीं हटा पा रहा था।

यह एक बहुत बढ़िया बात रही कि सुभद्रा दादी ने झुरमुट से लौटते हुए बेंत का सोंटा लाना याद रखा। महा जासूस मुंगेरीलाल सुभद्रा दादी के सामने नतमस्तक हो गये। वह इतने हक्का-बक्का रह गये थे कि अपनी आरामकुर्सी वह कंगूरे में ही भूल आये और पैदल ही लुढ़कते हुए घर ही ओर चल दिये।

अनुराग ट्रस्ट

लखनऊ